4 कर्ण का जीवन-दर्शन



रामधारीसिंह 'दिनकर'

(जन्म : ई. सन् 1908 : निधन : ई. सन् 1974)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगरे जिले के सिमरिया नामक गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मुंगेर तथा उच्च शिक्षा पटना में प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके कुछ समय तक अध्यापनकार्य किया। दिनकरजी सीतामढ़ी में सब रजिस्ट्रार और मुज्जफरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। वे भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष भी रहे थे।

दिनकरजी की सब-से बड़ी विशेषता है- अपने देश और युग के प्रति-जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं - विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। उनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। उनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है।

'उर्वशी', 'रश्मिरथी', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरूक्षेत्र' उनकी काव्यकृतियाँ हैं। 'उर्वशी' के लिए उन्हें सन् 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनका चिंतन ग्रंथ है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'अर्धनारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं। उनका कृतित्व गुणवत्ता और परिमाण दोनों दृष्टि से विपुल है।

प्रस्तुत खंण्डकाव्यांश में 'रश्मिरथी' महारथी कर्ण के करुण किन्तु भव्य जीवन की मीमांसा करनेवाला खण्डकाव्य है। सारे अन्यायों को सहकर कर्ण जन्मजात महानता पर पुरुषार्थजन्य महानता की विजय चाहता है। अंत में जब पाण्डवश्रेष्ठ के रूप में सब कुछ प्राप्त करने का प्रलोभन सामने आता है तब भी वह अविचलित रहता है और जिसने आज तक साथ दिया उस मित्र को किसी भी मोल पर छोड़ना नहीं चाहता। कृष्ण, कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में ले आने के लिए उससे मिलते हैं, उस कथाप्रसंग से प्रस्तुत काव्यांश लिया गया है।

वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
करतल से झरती रहे सदा,
निर्धन को भरती रहे सदा।
तुच्छ है, राज्य क्या है केशव? पाता क्या नर कर प्राप्त विभव?
चिन्ता प्रभूत, अत्यल्प हास, कुछ चाकचिक्य, कुछ क्षण विलास।
पर, वह भी यही गँवाना है,
कुछ साथ नहीं ले जाना है।
मुझ-से मनुष्य जो होते हैं, कंचन का भार न ढोते हैं,
पाते हैं धन बिखराने को, लाते हैं रतन लुटाने को।
जग से न कभी कुछ लेते हैं,
दान ही हृदय का देते हैं।
प्रासादों के कनकाभ शिखर, होते कबूतरों के ही घर,
महलों में गरुड़ न होता है, कंचन पर कभी न सोता है।
बसता वह कहीं पहाड़ों में,
शैलों की फटी दरारों में।
होकर समृद्धि-सुख के अधीन, मानव होता नित तपःक्षीण,
सत्ता, किरीट, मणिमय आसन, करते मनुष्य का तेज हरण।
नर विभव-हेतु ललचाता है,
पर, वही मनुज को खाता है।

चाँदनी, पुष्प-छाया में पल, नर गले बने सुमधुर, कोमल,
पर, अमृत क्लेश का पिये बिना, आतप, अंघड़ में जिये बिना;
वह पुरुष नहीं कहला सकता,
विघ्नों को नहीं हिला सकता।
उड़ते जो झंझावातों में, पीते जो वारि प्रपातों में,
सारा आकाश अयन जिनका, विषघर भुजंग भोजन जिनका;
वे ही फणिबंध छुड़ाते है,
धरती का हृदय जुड़ाते है।
मैं गरुड़, कृष्ण! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विष उसे छोड़।
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वैभव धन-दौलत **विलास** सुखोपभोग **चाह** इच्छा, अभिलाषा **परवाह** चिन्ता, व्यग्रता **निर्मल** पवित्र, शुद्ध **करतल** हथेली **निर्धन** धनरहित, कंगाल, दरिद्र **विभव** धन, संपत्ति, ऐश्वर्य **प्रभूत** अधिक, प्रचूर **अत्यल्प** बहुत थोडा **हास** निंदा, उपहास **चाकचिक्य** चमक, चकाचौंध **कंचन** सुवर्ण, सोना **प्रासाद** देवताओं या राजाओं का घर **कनकाभ** स्वर्णिम आभावाले **शैल** पर्वत, पहाड़, चट्टान **दरार** दरज, चीर, फूट **तपःक्षीण** निर्बल **किरीट** मुकुट **तेज** प्रभाव, कान्ति, चैतन्यात्मक ज्योति, चमक **कोमल** मृदुल, सुकुमार **क्लेश** दुःख, कष्ट, वेदना **अमृत** मुक्ति **आतप** धूप, उष्णता, गरमी **अंघड** आँधी **झंझावात** वर्षा सहित तीव्र आँधी **वारि** जल, पानी **प्रपात** पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा **अयन** गति, चाल, पथ, गमन **विष** गरल, ज़हर **भुजंग** सर्प **विपद** आपत्ति, संकट **धोर** भयंकर, विकराल **पाटना** ढेर लगा देना **अहिपाश** साँप का बंधन, फणिबंध

स्वाध्याय

1. ऊँचे स्वर में पढ़िए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :

अत्यल्प, चाकचिक्य, कनकाभ, तपःक्षीण, क्लेश, झंझावात, फणिबंध

2. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(1) विभव से क्या प्राप्त होता है?
(2) धन-संपत्ति किस लिए है?
(3) समृद्धि-सुख के अधीन मानव का क्या होता है?
(4) फणिबंध कौन छुड़ाते हैं?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(1) वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
करतल से झरती रहे सदा,
निर्धन को भरती रहे सदा।

(2) मैं गरुड़, कृष्ण ! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विध उसे छोड,
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

4. टिप्पणी लिखिए :

(1) कर्ण की अभिलाषा

(2) कर्ण का मित्रधर्म

5. विरोधी शब्द लिखिए :

निर्मल, निर्धन, प्रभूत, कोमल, अमृत

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक में से ढूँढकर उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

सुखोपभोग, हथेली, प्रचूर, दरज, आँधी, पानी, गरल, चट्टान

प्र	भू	त	सं	त
क	द	अं	ध	ड
र	रा	वि	ला	स
त	र	नि	शै	वा
ल	वि	ष	ल	रि

7. अंदाज अपना-अपना : अपना मत स्पष्ट कीजिए :

(1) यदि कोई जरूरतमंद इन्सान आपसे मदद माँगे तो आप क्या करते ?

(2) आपको पता चले कि आपका दोस्त संकट में फँसा हुआ है तो आप क्या करेंगे ?

(3) आपके पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति है, तो क्या करोंगे ?

योग्यता-विस्तार

- **प्रकल्प कार्य (Project Work) :**
  छात्रों से निर्देशित विषय पर प्रकल्प कार्य करवाइए ।
  (1) भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाली व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
  (2) प्रसिद्ध दानवीरों के जीवन-प्रसंगों का संकलन कीजिए।

●